प्रा. डॉ. बी. डी. सगरे
एम.ए., पीएच्.डी.
हिन्दी विभाग,
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा

प्रमाण पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि **अनिल शिवाजी मंडले** ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्. फिल्. (हिन्दी) उपाधि के लिये **''हिंदी उपन्यासों में चित्रित दलित जीवन के विविध आयाम'' (जंगल के आसपास, शैलूष, परिशिष्ट, नरककुंड में बास के विशेष संदर्भ में)** शीर्षक से प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है। यह शोधार्थी की मौलिक कृति है। जो तथ्य इस लघु-शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किये है, मेरी जानकारी के अनुसार वे सही हैं। अनिल शिवाजी मंडले के प्रस्तुत शोध कार्य के बारे में पूरी तरह सन्तुष्ट हूँ। इस लघु-शोध-प्रबंध को आद्योपांत पढ़कर ही मैं इसे परीक्षणार्थ अग्रेषित करने हेतु अनुमति प्रदान करता हुँ।

सातारा

दिनांक - १०/११/२००४

प्रा. डॉ. बी. डी. सगरे

शोध-निर्देशक

अनुशंसा

हम अनुशंसा करते हैं कि, अनिल शिवाजी मंडले का एम्.फिल्. (हिन्दी) का लघु-शोध-प्रबंध **''हिंदी उपन्यासों में चित्रित दलित जीवन के विविध आयाम'' (जंगल के आसपास, शैलूष, परिशिष्ट, नरककुंड में बास के विशेष संदर्भ में)** परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

प्रा. डॉ. बी. डी. सगरे
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा

LAL BAHADUR SHASTRI COLLEGE
SATARA

सुहास साळुंखे
प्राचार्य,
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा

प्रख्यापन

''हिंदी उपन्यासों में चित्रित दलित जीवन के विविध आयाम'' (जंगल के आसपास, शैलूष, परिशिष्ट, नरककुंड में बास के विशेष संदर्भ में) यह लघु-शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्.फिल्. के लघु-शोध-प्रबंध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिये प्रस्तुत नहीं की गई है।

सातारा **(अनिल शिवाजी मंडले)**

दिनांक 30/11/2008

प्राक्कथन

साहित्य समाज का दर्पण है। साहित्य समाज में स्थित मानव का वास्तविक चित्रण करता है। आज का आधुनिक कहनेवाले साहित्य का स्तर व्यापक हो रहा है। गाँव, कस्बों, गलियों, गंदी बस्तियों का जीवन सत्य साहित्य का विषय बन रहा है। साहित्य की अनेक विधाएँ पायी जाती है। लेकिन आज उपन्यास यह विधा सबसे अधिक लोकप्रिय रही है। भाव और शिल्प की दृष्टि से यह विधा अधिक संपन्न रही है। स्वातंत्र्योत्तर काल के उपरान्त लिखे उपन्यास में मानवी जीवन, समाज जीवन, नारी जीवन, शोषण, उस काल की धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक परिस्थिति, साथ ही इन परिस्थितियों से प्रभावित समाज जीवन आदि सभी बातों का यथार्थ चित्रण होने लगा। जिससे उपन्यास को ''मानवी जीवन का महाकाव्य'' कहा जाता है। हिंदी की उपन्यास विधा इसी कारण समृध्द एवं सशक्त बनी है।

सजग साहित्यकार उसी को कहा जाएगा जो समकालीन जीवन का परिस्थितियों के अनुरूप चित्रण करता हो। उपन्यास भाव-भावना एवं संवेदना का वाहक ही नहीं बल्कि चरित्र का भी अंकन है जिससे उपन्यास एक विचारधारा के रूप में बहता रहता है। यह मानवी जीवन गाथा समयानुसार परिवर्तित होती रही है उसके साथ यह साहित्यधारा भी बदलती गयी है। परिणामत: साहित्य की अन्य विधाओं के साथ उपन्यास का रूप बदलता जा रहा है। स्वातंत्र्योत्तर काल में समाजजीवन में होनेवाले परिवर्तन का सशक्त अंकन करने में उपन्यास सफल रहा है। ज्ञान देनेवाला, मनोरंजन करनेवाला, उपन्यास आज शोषित, पीड़ित, दलित, अबला की आवाज बना है। किसान, मजदूर, विधवा, मजदूर और संघर्ष से भरे हुए दलितों की आशा-आकांक्षाओं को व्यक्त करनेवाला उपन्यास समाजजीवन की हर झाँकी प्रस्तुत करनेवाला तस्वीर बना है। झुग्गी, झोपडी, बस्ती, मुहल्ला, गाँव, नगर, महानगर में स्थित दलितो की कथा बतानेवाला साहित्य आज चिंतन का विषय रहा है।

आधुनिक युग में प्रेमचंदजी के कारण हिंदी उपन्यास को एक नयी दिशा और एक नयी गति मिली है। उन्होंने उपेक्षित व्यक्ति, नारी एवं दलित जीवन आदि को साहित्य का विषय बनाकर नई-नई रचनाओं का सृजन किया है। उनके साहित्य के इस क्षेत्र के कार्य की वजह से 'उपन्यास सम्राट' कहा जाता है। निराला, भगवतीचरण वर्मा, जगदीशचंद्र, मदन दीक्षित, नरेंद्र वर्मा, शैलेष, मटियाणी, भगवती प्रसाद शुक्ल, चंद्रमोहन प्रधान आदि जैसे अनेक रचनाकारों ने अपनी कलम को शस्त्र का रूप देकर दलितों का जीवन चित्रण किया। जिससे कारण दलित भी अपने अधिकारों को पहचानने लगे। उनके मन में भी विद्रोह की भावना पनपने लगी। आज का दलित इन से प्रेरणा लेकर अपने अधिकारों के लिए लढता हुआ दिखायी देने लगा है।

हिन्दी के साथ-साथ मराठी साहित्य में भी दलित साहित्य लेखन की अलग और स्वतंत्र विधा रही है। परंतु मराठी साहित्य ने इस दलित जीवन की प्रेरणा, हिन्दी साहित्य से ली है। दलितों का जीवन, उनका अनुभव, भोगा हुआ यथार्थ, उनकी जीवन की समस्या, उनका होनेवाला धर्म परिवर्तन, समाज में उत्पन्न होनेवाली नई जाति-व्यवस्था आदि सभी का चित्रण दलित साहित्य में हो रहा है। पढ़ा लिखा दलित अपने भाई से दूर जा रहा है। आज की शिक्षा व्यवस्था, सरकारी विकास योजनाएँ, समाजसेवकों का कार्य आदि के कारण आज तक शोषित और उपेक्षित रहा दलित समाज संघर्ष कर रहा है। जिससे आज समाज नवजागरण, जनजागरण और संगठन के दौर से चल रहा है। समाज व्यवस्था में परिवर्तन हो रहा है।

स्वातंत्र्योत्तर काल में समाज जीवन में परिवर्तन होने लगा। महात्मा गांधी, महात्मा फुले, शाहू, अम्बेडकर जैसे समाजसुधारकों के कारण समाज में परिवर्तन हुआ। साथ-ही-साथ साहित्य में भी नई विचारधारा और नई प्रवृत्ति का आगमन हुआ। अम्बेडकरजी के 'शिक्षित बनो, संगठित बनो, संघर्ष करो' इस नारे के साथ सारा दलित समाज जाग उठा। दलित, शोषित समाज में नई चेतना पैदा हो गई। जिसका चित्रण साहित्यकारों ने अपनी अपनी रचनाओं में किया। ऐसा परिवर्तित होनेवाला जीवन चित्रण करना ही इस साहित्य का उद्देश्य रहा है।

दलित साहित्य आज के दलित मन का आलेख एवं दस्तावेज का प्रतीक बना है। यह साहित्य साधारण साहित्य न रहकर दलित चेतना का पक्षधर बन गया है। भारतीय समाज व्यवस्था में संतों और धर्मों का महत्व अधिक रहा है। परिणामत: साहित्य के स्वरूप में भी बदलाव आ गया। धर्म गुरू समाज व्यवस्था के कर्ता बने हैं। परंतु संत, महंत, भक्त, सुधारक, समाजसेवक और साहित्यकारों ने इसका विरोध करके नये समाज की नींव डाली। परिणामत: समाज का प्रारंभिक रूप बदल गया। साहित्यकारों ने लोकजीवन और लोकसंस्कृति को साहित्य में स्थान देकर जनवादी साहित्य का निर्माण किया। प्राचीन काल से शोषित, दास, दलित जीवन का चित्रण होने लगा। दलित वह है जिसे सुधारने का मौका नहीं मिलता। अर्थात उनका यह विकसित होनेवाला रूप रोक लिया जाता है। उन्हें दबाकर रखा जाता है। उनमें चेतना का विकास नहीं होने देते, ऐसे दलित, बेसहारा लोगों का हर तरह से शोषण किया जाता है। उन पर अत्याचार किए जाते है। ऐसे शोषित मानवी जीवन की कहानी दलित साहित्य रहा है।

साहित्य ने दलित संघर्ष और चेतना को एक नयी दिशा और नयी गति देने का कार्य किया। आजादी के बाद दलितों ने जो सुधारवादी तत्व को अपनाया वही उनके विकास का कारण बना। आजादी के बाद दलितोध्दार, दलित जागरण, दलित संगठन आदि के रूप में दलितों ने अपना कार्य शुरू किया। समाज जीवन, की बदलती दिशाओं और गतिविधियों का प्रतिबिंब साहित्य में चित्रित होने लगा। समाज जीवन की नई व्याख्या करनेवाले दलित साहित्य को स्पष्ट करना प्रस्तुत लघु-प्रबंध का महत्वपूर्ण उद्देश्य रहा है। शिक्षित दलितों में विद्रोह की भावना देखने को मिलती जिसका दस्तावेज आलोच्य उपन्यास है। जिन्हें साहित्य में स्थान देकर उनकी व्यथा को वाणी देने का कार्य आरंभ हुआ।

स्वतंत्रता के बाद समाज व्यवस्था, राजनीतिक व्यवस्था में परिवर्तन होने लगा। दलितों का उध्दार करके उनमें नवीन विचारों की धारा को प्रवाहित करने के कार्य समाज सुधारकों ने शुरू किया। इससे पहले तो दलितों में क्रांति शुरू हो गयी लेकिन बाद में साहित्य में भी क्रांति ने जन्म ले लिया। गतिशील जीवन का वर्णन, विद्रोह एवं क्रांति का प्रकटीकरण, प्रगतिवादी विचारों एवं घटनाओं का मुल्यांकन साहित्य में होने लगा। समाज में सामाजिक समानता का निर्माण करके मनुष्य-मनुष्य में जो अंतर या दुरीयाँ उत्पन्न हो गयी है उसे हिंदी की उपन्यास विधा ने दलितों के हर एक पक्ष को उजागर करते हुए उन्हें वाणी देने का कार्य शुरू किया।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध के लिए राकेश वत्स का 'जंगल के आसपास', शिवप्रसाद सिंहजी का 'शैलूष', जगदीशचंद्रजी का 'नरककुंड में बास' और गिरिराज किशोर जी द्वारा लिखित 'परिशिष्ट' इन उपन्यासों का आधार लिया है। इन चार उपन्यासों के आधार पर हिंदी उपन्यासों में चित्रित दलित जीवन, उनकी समस्याएँ, उनका विकास क्रम, उनपर पडा हुआ सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक परिस्थितियों का परिणाम आदि पर प्रमुख रूप से प्रकाश डाला है।

इस लघु-शोध-प्रबंध को छह अध्यायों में विभाजित किया है।

प्रथम अध्याय - ''हिंदी उपन्यास और दलित जीवन'' :- इस प्रस्तुत अध्याय में साहित्य और समाज, साहित्य और समाजजीवन का संबंध, समाज की निर्मिती आदि को स्पष्ट करते हुए दलित की व्याख्या उसकी व्यापकता और संकुचित अर्थ, स्पष्ट किया है। दलितों का जीवन, उनकी आज की वर्तमान स्थिति आदि का वर्णन किया है। इसे साकार रूप देनेवाले महात्मा फुले, छत्रपति शाहू, डॉ.बाबासाहेब अम्बेडकर, महात्मा गांधी का योगदान स्पष्ट करते हुए दलितोध्दार को चित्रित किया है। साथ ही उनकी शैक्षिक अवस्था पर भी प्रकाश डाला है।

द्वितीय अध्याय - ''आलोच्य उपन्यासों की कथावस्तू'' (जंगल के आसपास, शैलूष, नरककुंड में बास, परिशिष्ट के विशेष संदर्भ में) :- उपन्यास के तत्व, कथावस्तु का महत्व, उसके प्रकार आदि का संक्षिप्त उल्लेख करते हुए कथावस्तु की अनिवार्यता एवं महत्व स्पष्ट किया है। आलोच्य उपन्यासों की कथावस्तु का शैल्पिक दृष्टि से विवेचन किया है। जंगल के आसपास, शैलूष, नरककुंड में बास, परिशिष्ट आदि उपन्यासों की कथावस्तु देकर उसमें चित्रित दलित जीवन को स्पष्ट किया है।

तृतीय अध्याय - ''आलोच्य उपन्यासों में चित्रित दलित जीवन'' (जंगल के आसपास, शैलूष, नरककुंड में बास, परिशिष्ट के विशेष संदर्भ में) :- इस अध्याय में दलितों के जीवन से संबंधित बातों पर प्रकाश डाला है। जिसमें उनमें स्थित अंधश्रध्दा, उनके उत्सव, पर्व, तीज-त्यौहार संबंधी मान्यता, रूढि-परंपरा और

प्रथा पर विश्वास को स्पष्ट करते हुए उनमें प्रचलित विवाह संस्कार और मृतक संस्कार की विधि पर प्रकाश डाला है। उनकी देवी-देवताओं संबंधी मान्यता को स्पष्ट करते हुए उनमें प्रचलित बलिप्रथा का भी वर्णन किया है। साथ-ही-साथ उनकी आर्थिक स्थिति एवं व्यवसाय, उनके रहन-सहन और निवास व्यवस्था तथा शिक्षा संबंधी स्थिति को दर्शाने का प्रयास किया है। दलितों के जीवन में होने-वाले जातीय भेदाभेद एवं जातीय पंचायत और संगठन तथा समूह भावना को चित्रित किया है। दलितों में प्रचलित लोक कथा और लोक गीतों का उल्लेख करते हुए उनकी राजनीतिक स्थिति और उससे होनेवाला परिवर्तन को स्पष्ट किया है।

चतुर्थ अध्याय, ''आलोच्य उपन्यासों में चित्रित दलित जीवन की समस्याएँ'' (जंगल के आसपास, शैलूष, नरककुंड में बास, परिशिष्ट के विशेष संदर्भ में) :- इसके अंतर्गत अंधविश्वास की समस्या, भूत-प्रेत, चुडैल-डायन संबंधी अंधविश्वास, मंत्र-तंत्र, झाड-फूँक, जादू-टोना संबंधी अंधविश्वास, शुभ-अशुभ, शकुन-अपशकुन, पाप-पुण्यसंबंधी अंधविश्वास, शोषण की समस्या के अंतर्गत जमींदारों द्वारा होनेवाला शोषण, धार्मिक व्यक्तिद्वारा होनेवाला शोषण, सरकारी अफसरोंद्वारा होनेवाला शोषण, पुलिस द्वारा होनेवाला शोषण और नारी शोषण आदि पर विचार किया है। जातीय भेदाभेद की समस्या, भ्रष्टाचार की समस्या, अशिक्षा की समस्या, अवैध यौन संबंधों की समस्या, धर्म परिवर्तन की समस्या, नशापान की समस्या, आदि समस्याओं का विस्तृत विवेचन किया है। साथ-ही-साथ अर्थाभाव एवं दरिद्रता की समस्या, भौतिक सुख-सुविधाओं के अभाव की समस्या, बेरोजगारी की समस्या आदि गौण समस्याओं पर यत्र-तत्र उल्लेख किया है। दलितों का जीवन समस्याओं की गाथा है, उसे स्पष्ट करते हुए सुलझाने के उपाय भी स्पष्ट किये हैं।

पंचम अध्याय - ''आलोच्य उपन्यासों में चित्रित विकसित एवं चेतित दलित जीवन'' (जंगल के आसपास, शैलूष, नरककुंड में बास, परिशिष्ट के विशेष संदर्भ में) :- इस अध्याय में चेतना का अर्थ, चेतना का निर्माण, दलितों में चेतना निर्मिति के कारण, दलितोध्दार एवं दलित जागरण का कार्य आदि को स्पष्ट करते हुए दलित चेतना की आवश्यकता पर प्रकाश डाला है। साथ-ही-साथ आलोच्य उपन्यासों में चित्रित विकसित एवं चेतित दलित जीवन का वर्णन किया है।

षष्टम अध्याय - ''उपसंहार'' :- में लघु-शोध-प्रबंध में उपलब्ध निष्कर्षों को समाकलित किया हैं। दलित जीवन की विविध झाँकियाँ, उसमें होनेवाला परिवर्तन, उत्पन्न होनेवाली चेतना, आदि पर विचार किया है।

अंत में संदर्भ ग्रंथसूची नत्थी की है।

यह मेरा परम सौभाग्य है कि लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय के हिन्दी विभाग के प्राध्यापक डॉ. बी. डी. सगरे के निर्देशन में शोधकार्य करने का अवसर मिला। उनके मार्गदर्शन और प्रेरणा के कारण यह शोध कार्य संपन्न हो सका। श्रध्देय गुरूवर्य डॉ. बी. डी. सगरेजी ने व्यस्त क्षणों में मुझे अपना अमूल्य समय देकर बहुमूल्य निर्देशों के द्वारा हिंदी उपन्यास के अध्ययन में मुझे उत्साह और प्रेरणा दी। जिसके फलस्वरूप यह लघु-शोध-प्रबंध पूर्ण हो सका। उनके प्रति शाब्दीक आभार मेरे हृदय में स्थिति कृतज्ञपूर्ण भावों को अभिव्यक्त करने में असमर्थ हैं।

प्रस्तुत शोध कार्य में प्राचार्य एस. एस. साळुंखे, डॉ. अर्जुन चव्हाण (कोल्हापुर), डॉ. पी. एस. पाटील (कोल्हापुर), डॉ. रमेशकुमार गवळी (शिवनगर), प्रा. भालदरे, प्रा. जयवंत जाधव, प्रा. दिलीप यादव आदि के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने मुझे समय-समय पर बहुमूल्य मार्गदर्शन किया।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध के कार्य में लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय के ग्रंथपाल श्री. कुंभार व उनके सहकारी, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के ग्रंथपाल व उनके सहकारीयों का मै विषश ऋणी हूँ, जिन्होंने पुस्तकों को जुटाने में मेरी अत्यन्त तत्परता से सहायता की।

मेरे शोध-कार्य में मुझे सदा प्रेरणा देनेवाले तथा मेरा उत्साह बढाने वाले मेरे विद्यालय (कृष्णा माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक विद्यालय, शेरे, ता.कराड) के संस्थापक ॲड्. बाळासाहेब शेरेकर, श्री. एस. व्ही. कुलकर्णी, श्री. आय. ए. मुल्ला, श्री. व्ही. के. कुलकर्णी, श्री. एस. एम. जगदाळे, श्री.व्ही. एम. पाटील, श्री.एस. आर. कांबिरे, श्री. बी. एस. पानवळ, श्री. एम. पी. घाडगे, श्री. एस. आर. भारती, श्री. एस. पी. शिखरे, श्री. बी. बी. कणसे, श्री. एस. डी. जाधव, श्री. एस. आर. सराटे, श्री. जे. जे. कुलकर्णी, सौ. आर. पी. निकम, सौ. एस. आर. केतकर, सौ. एम. व्ही. बंदसोडे, श्री. एम. व्ही. भोपळे, श्री. पी. डी. पाटील आदि सहित विद्यालय के सभी सहकारी तथा मित्र वर्ग के प्रति ऋणी हूँ, जिनकी मुझे प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से विशेष मदत मिली।

मेरे शोध कार्य में सदा प्रेरणा देनेवाले मेरे नजदीकी मित्रों तथा परिवारिक श्री.संजय गायकवाड, श्री.राहुल बुरांडे, श्री.धनाजी माने, श्री.जगदीश पवार, श्री.अनिल शिंगाडे, श्री.सचिन खेडकर का मैं ऋणी हूँ जिनकी हरपल मुझे मदत मिलती रहती है।

मेरे शोध कार्य में प्रेरणा देनेवाले मेरे परमपूज्य पिताजी श्री. शिवाजी मंडले, माताजी शालन मंडले, बडे भाई श्री. दिपक मंडले, छोटे भाई राजेश मंडले तथा मेरी बहन कल्पना और परिवार के सभी लोगों के आशिर्वाद व शुभेच्छा तथा सहयोग पर प्रस्तुत शोध कार्य संपन्न हुआ। मैं अपने शोध की कार्यसंपन्नता के लिए अपना चचेरा भाई

मच्छिंद्रनाथ मंडले का विशेष रूप से कृतज्ञ हूँ। इन सभी की तपस्या, प्रेरणा, त्याग और सहकार्य आदि के कारण यह कार्य पूर्ण हो सका। साथ-ही-साथ मेरे रिश्तेदार व श्रध्देय श्री.विठोबा मदने तथा सभी रिश्तेदारों एवं परिचितों के प्रति कृतज्ञ हूँ, जिनका सहयोग तथा आशीर्वाद और प्यार मुझ पर हमेशा रहता है। इसके साथ-साथ मैं हमारे शोध-निर्देशक डॉ. सगरेजी की पत्नी सौ. अरूणा भरत सगरे, पुत्री कु. प्रियांका सगरे तथा पुत्र चि.प्रथमेश सगरे के प्रति विशेष आभारी हूँ जिनसे मुझे पारिवारिक स्नेह सहकार्य मिलता रहा।

अंत में इस लघु-शोध-प्रबंध को अत्यन्त कम समय में बड़ी कुशलता के साथ टंकित करनेवाले मे.रिलॅक्स सायक्लोस्टायलिंग, सातारा के श्री.मुकुंद ढवळे तथा उनके सहकारी श्री.राजू कुलकर्णी का कृतज्ञ हूँ।

(अनिल शिवाजी मंडले)

सातारा

दिनांक - १०/१९/२००४